खनन क्षेत्रों एवं बंजर भूमि का पारिस्थितिकी पुनःस्थापन

अन्य हितधारकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम

(12-14 दिसंबर, 2018)

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला में पर्यावरण वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के सौजन्य से दिनांक 12-14 दिसंबर, 2018 तक अन्य हित धारकों के लिए तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया । इस कार्यक्रम में सम्मानित शिक्षण संस्थानों से आए अध्यापक व छात्र, स्थानीय निकायों के प्रतिनिधि, महिला मंडलो के सदस्य, भारतीय तिब्बत सीमा पुलिस व पर्यावरण कार्यबल के जवान, तकनीकी अनुसंधान संस्थानों के तकनीकी कर्मी, संयुक्त वन प्रबंधन समितियों के सदस्य, गैर सरकारी संगठनों व पत्रकारिता से जुडे लोगों सहित लगभग 30 प्रतिभागीयों ने भाग लिया। । इस आयोजन का मुख्य उददेश्य इन सेवाओं से जुडे लोगों में खनन क्षेत्रों एवं बंजर भूमि के पारिस्थितिकी पुनःस्थापन की आवश्यकता एवं इससे जुडी तकनीकों को लेकर जागरूकता पैदा करना था ।

प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला के निदेशक डॉ० वी०पी० तिवारी दवारा किया गया । डा० तिवारी ने कहा कि हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, वानिकी अनुसंधान के कार्यों के साथ-साथ समय-समय पर विभिन्न हितधारकों के लिए कई प्रकार के प्रशिक्षण भी प्रदान करता है । उन्होंने कहा कि बंजर भूमियों का पारिस्थितिक पुनःस्थापन उत्पादकता वर्धन मे एक अहम कडी है

इसके साथ ही संसाधनों के संरक्षण, ब्रंजर एवं अपक्षीण भूमियो के प्रबंधन की दिशा में सटीक तकनीकों कों विकसित करने हेतू किए जाने वाले प्रयासों तथा इस ज्ञान को अंतिम प्रयोगी तक स्थानांतरण करना अति आवश्यक है । इन भूमियों के लाभदायक उपयोग में वनीकरण की वैज्ञानिक दृष्टि से सुदृढ तकनीकों की बहुत उपयोगिता है । उन्होने आगे कहा कि विकासात्मक गतिविधियो के साथ-साथ पर्यावरण सुरक्षा एवं सरक्षण के लिए ध्यान देना अति आवश्यक है और संस्थान की विभिन्न वैज्ञानिक अनुसंधान परियोजनाऐं हितधारकों की अनुशंसाओं पर आधारित होती है तथा इसका मुख्य उददेश्य हितधारकों को लाभ पंहुचाना होता है ।

उन्होने आगे सूचित किया कि यह संस्थान समाज की समसामयिक आवश्यकताओं एवं राष्ट्रीय जनादेश के सृदश रहकर कार्य कर रहा है, इसी राह पर चलते हुए यह संस्थान इस तीन दिवसीय प्रशिक्षण एवं प्रर्दशनी का कार्यक्रम अन्य हितधारकों के लिए इस आश्य के साथ आयोजित करवा रहा है ताकि इन लोग दवारा नीति निर्माणोन्मुखी प्रवधियों एवं समूची मानवता से जुडे सवालों के निपटान हेतू तरीकों एवं साधनों की प्राप्ति की जा सके । उन्होंने प्रयोगशाला में किए गए अनुसंधानों को धरातल एवं आम जनता तक पहुचाने की आवश्यकता पर भी बल दिया ।

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के पाठयक्रम निदेशक डा० आर०के० वर्मा ने प्रारम्भ में कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए कहा कि इस प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षणार्थियों को सरल प्रस्तुतिकरणों के माध्यम से विविध प्रकार की वैज्ञानिक जानकारी दी जाएगी तथा साथ ही अंबुजा सीमेंट उदयोग, दाडलाघाट, सोलन के खनन क्षेत्रों का भ्रमण भी करवाया जायेगा । उन्होने संस्थान द्वारा जिला सिरमौर के पांवटा साहिब व जिला सोलन के दाडला घाट में स्थित कश्लेग सीमेंट द्वारा जनित अपक्षीत भूमि पर पौध रोपण द्वारा किए गए पुनःस्थापन कार्यों एवं इन कार्यों में उपयोगी व कारगर सिद्ध हुई पौध प्रजातियों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी उपलब्ध करवाई ।

इसके पश्चात संस्थान के वैज्ञानिक डॉ संदीप शर्मा ने नर्सरी की स्थापना एवं उर्वरक प्रबंधन विषय में प्रतिभागीयों को जानकारी उपलब्ध करवाई । हिमाचल प्रदेश वन विभाग की और से डॉ० वी० आर० आर० सिंह, प्रधान मुख्य अरण्यपाल ने वन एवं नाजुक

पर्यावरण क्षेत्रों मे खनन द्वारा उत्पन्न विभिन्न समस्याओं एवं उनके निवारण संबंधी

चर्चा की और प्रतिभागीयों को खनन से जुडे नियम व कानुन की बारीकियों से भी आवगत करवाया । इसी दिन शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर, राजस्थान से विषय विशेषज्ञ के रूप में आई डॉ० रंजना आर्या ने अपक्षीण एवं बंजर क्षेत्रों में संसाधन संरक्षण तथा प्रबंधन के लिए प्रोद्योगिकी के बारे में रोचक एवं ज्ञानवर्धक प्रस्तुतीकरण दिया । इसके साथ ही संस्थान के वैज्ञानिकों डॉ विनीत ज्स्टि, श्री जगदीश सिंह तथा डॉ रणजीत कुमार द्वारा प्रतिभागियों को पारिस्थितिक पुनःस्थापन एवं प्रदूषण उन्मूलन के लिए उपयुक्त प्रजातियों, पोलोनिया को पारिस्थितिक पुनःस्थापना में उपयोगिता तथा पुनःवनीकरण के लिए सक्षम वृक्ष व झाडीनुमा प्रजातियों के बारे में जानकारी दी गई ।

कार्यक्रम के दूसरे दिन दिनांक 13.12.2018 को प्रतिभागियों को कशलेग खनन क्षेत्र, दाडलाघाट में क्षेत्रीय भ्रमण के लिए ले जाया गया जहां पर उन्हें खनन से संबंधित विभिन्न गतिविधियों के बारे में भी जानकारी उपलब्ध करवाई गई तथा इसके अतिरिक्त इस खनन क्षेत्र में संस्थान द्वारा किए गए पारिस्थितिक पुनःस्थापन कार्यों के बारे में भी बताया गया ।

कार्यक्रम के अंतिम दिन संस्थान के वैज्ञानिक डॉ० अश्वनी तपवाल ने बंजर भूमि के सुधार मे माइकोराइजा की भूमिका व उपयोग के बारे में प्रस्तुतिकरण द्वारा रोचक जानकारी दी । इसके बाद हिमाचल प्रदेश विज्ञान व प्रौद्योगिकी परिषद के वैज्ञानिक

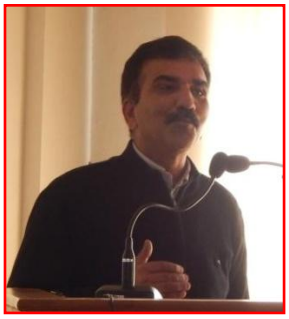

अधिकारी डॉ० आर०एस० थापा ने सूदूर संवेदी व भौगोलिक सूचना प्रणाली तकनीक द्वारा बंजर भूमि के वर्गीकरण के बारे में प्रस्तुतीकरण दिया गया । उद्यान एवं वानिकी विश्वविधालय नौणी (सौलन) से आए डॉ राजेश कौशल ने प्रतिभागियों को बदलती पर्यावरणीय परिस्थितियों में सरंक्षण बागवानी द्वारा बंजर भूमि के प्रबंधन के बारे में बताया तथा संस्थान के वैज्ञानिक श्री पीताबंर सिंह नेगी ने जुनिपर पॉलीकार्पस (शुक्पा) की पौधरोपण के लिए बीज एवं नर्सरी प्रौद्योगिकी के विषय में प्रस्तुतीकरण द्वारा जानकारी दी ।

समापन सत्र में संस्थान के निदेशक, डा० वी०पी० तिवारी ने प्रतिभागियों को इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने एवं इस विषय में रूचि पूर्वक जानकारी प्राप्त करने के लिए आभार व्यक्त किया । उन्होंने आशा प्रकट की कि यह प्रशिक्षण कार्यक्रम अपक्षीण क्षेत्रों व इससे जुड़े आयामों की दिशा में निश्चय ही अपने निहित उद्येश्यों की पूर्ति करेगा । समापन अवसर पर सभी प्रतिभागियों को निदेशक द्वारा प्रमाण-पत्र वितरित किए गये तथा आगे के कार्यक्रमों के लिए प्रतिकिया और सुझाव भी प्राप्त किए गए ।

अंत में डा० आर० के० वर्मा, पाठ्यक्रम निदेशक ने सभी प्रशिक्षणार्थियों का इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में उपस्थित होने तथा रूचिपूर्वक भाग लेने पर धन्यवाद ज्ञापित किया ।

प्रिंट मीडिया कवरेज

दैनिक भास्कर 12-12-2018

बंजर भूमि का पारिस्थितिक पुनः स्थापन पर कार्यशाला हुई शुरू

विभिन्न क्षेत्रों के 30 प्रतिभागी हिस्सा ले रहे हिस्सा

सिटी रिपोर्टर | शिमला

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला में खनन क्षेत्रों एवं बंजर भूमि का पारिस्थितिक पुनः स्थापन विषय पर तीन दिवसीय कार्यशाला बुधवार को आरंभ हो गई। इसका शुभारंभ संस्थान के निदेशक डॉ वीपी तिवारी ने किया। कार्यशाला में शिक्षक, छात्र, आईटीबीपी, ईको टॉस्क फोर्स के जवानों के अलावा स्थानीय निकायों, पंचायतों, महिला मंडलों, गैर सरकारी संगठनों सहित विभिन्न क्षेत्रों के करीब तीस प्रतिभागी हिस्सा ले रहे हैं।

इस मौके पर संस्थान के निदेशक डॉ वीपी तिवारी ने कहा कि अनुसंधान गतिविधियों व शोध कार्यों को जन साधारण के बीच और समाज के विभिन्न हित धारकों बीच पहुंचाना संस्थान के जानदेश का प्रमुख हिस्सा है। उन्होंने कहा कि वर्तमान परीपेक्ष्य में समाज की प्राथमिकता के अनुरूप वानिकी अनुसंधान व शोध करना समय की मांग है।

इस अवसर पर निदेशक डॉ वीपी तिवारी ने यह उम्मीद जताई कि इस कार्यशाला में प्रदान की जाने वाली तकनीकी जानकारी और सामजिक विषयों पर प्रदत ज्ञान को पारिस्थितिक सुरक्षा, पर्यावरण प्रबंधन और सतत विकास में कार्य करने के लिए उपयोगी व सहायक सिद्ध होगी।

पंजाब केसरी 12-12-2018

कार्यशाला का आयोजन

शिमला, 12 दिसम्बर (ब्यूरो): हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला (एच.एफ.आर.आई.) में बुधवार को 3 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू हुआ। अपक्षीण क्षेत्रों की पारिस्थितिक पुन: स्थापना विषय पर आयोजित कार्यशाला का शुभारंभ निदेशक एच.एफ.आर.आई. डा. वी.पी. तिवारी ने किया। डा. वी.पी. तिवारी ने कहा कि वास्तव में देश के लगभग 23 प्रतिशत भाग पर आच्छादित वन संपदा अपने अंदर कई मूल्यों को समाहित किए हुए है।